भजन

तर्ज–दो सितारों का जिमी पर है मिलन

अब हजारों का जिमीं पर है मिलन आपके हाथ
मुस्कुराती हुई चलेंगी धनी आपके साथ
रंग लाई है मेरी सुरता मिले प्राणों के नाथ
सोलह सिनगार किए बन के दुल्हन पाई मुराद

1– अर्श दिल को मेरे प्रीतम ने जब बनाया है
मेरी मेंहदी में इमाम मेहंदी का रंग आया है
तोड़ के नींद के पर्दे का चलन की मुलाकात
करके अंगीकार धनी ने दी मुझको सौगात

2– जिनको पाने की तमन्ना थी उन्हें पाया है
मेरा महबूब मुझसे इश्क लेने आया है
चूमती हैं तेरे कदमों को दुल्हन प्राणों के नाथ
सुख निजघर के दिए करके मेहर की बरसात

3– मेरे प्रीतम तेरी भी शान क्या निराली है
नूर ही नूर भरा है लट घुंघराली है
इत्रे हिना की खुशबू से है मदहोश जमात
मेरी निसवत थी निसवत से मिले प्राणों के नाथ